पंचम अध्याय

उपसंहार

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष तक पहुँच चुकी हूँ कि वे एक उच्च श्रेणी के लेकिन सादगी से रहनेवाले महान गद्य-साहित्यकार हैं। जिस परिवार में भीष्मजी का जन्म हुआ वह परिवार सुसंस्कृत, आदर्श परिवार था। उनके परिवार का माहौल राष्ट्रभावना से ओत-प्रोत था। वे मध्यवर्गीय कर्मशील परिवार में बड़े हुए हैं। घर में दोनों भाईयों को राम - लक्ष्मण जैसे आदर्श भाई की तरह रहना सिखाया गया था। उन्होंने भारत के झूठे इतिहास को भी नजदीकी से देखा है। उन्होंने यहाँ के मध्यवर्गीय लोगों के जीवन को भी देखा हैं। उसी तरह अपने शारीरिक दौर्बल्य का भी अनुभव किया है, जिससे उन्हें साहित्यकार बनने की प्रेरणा मिली है। वे एक विनयशील, शालीन, मितभाषी, शांत साहित्यकार हैं। सेवाभाव तथा संवेदनशीलता उनकी खास अहमियत हैं।

भीष्मजी ने बहुत कुछ लिखा है लेकिन उनकी सभी रचनाओं को पढ़ना और समेटना और उनका रचनात्मक महत्व रेखांकित करना बहुत कठिन है। फिर भी उनका कृतित्व देखने के बाद पता चलता है कि वे मध्य वर्ग के श्रेष्ठ रचनाकार हैं। भारत देश के बहुसंख्य मध्य वर्गीय लोगों की इच्छा-आकांक्षा, अभाव, संघर्ष, पीड़ा, दु:ख-दर्द तथा विडम्बनाओं को उन्होंने अपने साहित्य में चित्रित किया हैं। जिसमें ग्रामीण तथा शहरी जीवन का वास्तविक चित्रण है, व्यापक चिंता, उलझन तथा कलात्मकता हैं। वे पात्रों का चुनाव कल्पना के माध्यम से नहीं करते है तो समाज के जीते जागते वास्तविक पात्रों से करते हैं। उनके लेखन में यथार्थता जादा है और कल्पना कम है। उनके साहित्य में साहित्यिक वादविवाद तथा किसी भी प्रकार का सिध्दान्त नहीं है। तो केवल अनुभव की ईमानदारी है।

भीष्मजी, यशपाल, प्रेमचंद, टालस्टाय जैसे महान साहित्यकारों से प्रभावित जरूर है। लेकिन इसी प्रभाव से ही मुक्त होकर अपने साहित्य को प्रभावी तथा प्रगतिशील बना दिया है। वे जिस सामाजिक परिवेश में रहते हैं, जिन संस्कारों में बड़े हुए है उसी के आधार पर वास्तविक साहित्य का निर्माण करते हैं। सामाजिक तथा व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं का अध्ययन स्वयं करते हैं। उनके पास सूक्ष्म निरिक्षण दृष्टि हैं। उन्होंने केवल यथातथ्य का चित्रण नहीं किया है। समाज में जो कुछ घटित हो रहा है उसका इतिहास के साथ, संस्कृति के साथ समन्वय कर समसामायिकता को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। और मनुष्य को मानवीयता की दृष्टि प्रदान करने का प्रयास किया है। प्रगतिशील जीवन के निकट जाकर वे इतिहास को भूल नहीं सकते। समाज की जीवनदृष्टि, आशा-निराशा, आकांक्षा, पीड़ा, दु:ख-दर्द, समस्या, अभाव, संघर्ष, द्वंद्व, जय-पराजय, विकृतियाँ, विरूपता, उत्तेजना, व्याकुलता, धैर्य, चिंता आदि को प्रगतिशील दृष्टिकोण से देखा हैं। जो उनके गंभीर, चिंतन, मनन, धैर्यशील व्यक्तित्व के उद्घाटित करने के लिए काफी सक्षम है। उनके पास जागरूकता तथा सतर्कता है इसका परिचय मिलता है। जातीयता तथा राष्ट्रीयता के प्रति स्वाभिमान है। इसी कारण "तमस", "अमृतसर आ गया", "खिलौने", "रामचन्दानी", "नया मकान", "लीला नंदलाल की" जैसी रचनाओं में उन्होंने सांप्रदायिकता का विरोध किया है।

भीष्मजी आदर्श क्रांन्तिकारी साहित्यकार है। सब के प्रति उनके मन में सहानुभूति हैं। आज हमारे देश में राष्ट्रीयता महत्वपूर्ण है। एकता की आवश्यकता है। विभिन्न संप्रदायों के बीच प्रेम और स्नेह की आवश्यकता है। धर्म और राजनीति को एक दूसरे से अलग करने की जरूरत है। जातीयता को नष्ट करने की आवश्यकता है। सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता है। मानवीयता, मानवधर्म समाज के आदर्श जीवन के लिए आवश्यक है। "तमस" एक ऐसा दस्तावेज है जिसमें इन्हीं बातों का जिक्र भीष्मजी ने किया है। सांप्रदायिकता और सामाजिक दंगों का संवेदना के धरातल पर किया गया विवरण इसमें है। सांप्रदायिकता रूपी "तमस" (अंध:कार) समाज में कितनी बुरी तरह व्याप्त है, इसमें राजनीतिक कुटिलता अपना मुनाफा किस प्रकार हासिल करती है और साधारण जनता दुरावस्था और दयनीयता की शिकार बनती हैं। और धार्मिक संघटना सक्रिय बनकर जातीयता के नाम पर निर्दोष लोगों का कत्ल करती हैं। जानवर से भी घिनौना उनका व्यवहार है, क्या यह धर्म है? क्या यही मानव के प्रति मानव का व्यवहार है? क्या यही हमारी नैतिकता है? इन प्रश्नों का समाधान भीष्मजी ने "तमस" में चित्रित किया है और समाज के आदर्श तथा मानवीय प्रेरणा की कामना की है। जिस में जनता की एकता सशक्त बन सके। संप्रदाय तथा जातीयता का विरोध कर प्रगति की अपेक्षा की है। भारत की महान संस्कृति का वारिस जता ने के लिए पाठक को प्रेरित किया हैं। जो आज भी हमारे लिए उपयुक्त हैं।

इस दृष्टि से "तमस" भीष्म साहनी का श्रेष्ठ उपन्यास है। उनके सभी उपन्यासों में सर्वाधिक पुरस्कार, सफलता और ख्याति "तमस" को प्राप्त हुयी है। जो पाठक को समाज से जोड़ने का प्रयास कर जीवन के सच्चे अनुभव का एहसास कराता है।

भीष्म साहनी के "तमस" उपन्यास के कथ्य और शिल्प का अध्ययन और अनुशीलन करने पर यह कहा जा सकता है कि उनकी विचारधारा साम्यवाद के निकट है। उनका दृष्टिकोण किसी व्यक्ति, राजनीति तथा धर्म के प्रति न होकर समाज के प्रति है। जिसमें मानवीयता की भावना ओत-प्रोत है। वे समाज को गंभीर दृष्टि से आंकते हैं। उनके विचार प्रवृत्तियों से परिचित होकर समाज की बुराईयों की ओर संकेत करते हैं और मध्यमवर्गीय परिवारों में आदर्श वातावरण की शांति तथा सद्भावना की कामना करते हैं। समाज के व्यक्ति मन में गहराई के साथ पैठी हुयी सांप्रदायिकता, जातीयता तथा मिथ्या-धर्माभिमान का पर्दापाश करते हैं। समाज को सजग बनने का महान संदेश देते हैं। भारत की महान संस्कृति की याद दिलाकर समाज में नैतिक मूल्यों का -हास, संकीर्ण विचार धाराओं का धिक्कार करते हैं।

"तमस" उपन्यास भारतीय इतिहास की यथार्थ शोकान्त गाथा है। इसमें लेखक ने केवल यथा-तथ्य बातों को चित्रित नहीं किया है, बल्कि प्राचीन, मध्ययुगीन तथा अर्वाचीन कालखण्ड का समन्वय कर समाज के यथार्थ का वास्तविक चित्रण किया है। उपन्यास मानव जाति का चित्र होता है इसकी प्रचिती "तमस" में होती है। मानव जाति स्वयं को सीमित घेरे में किस प्रकार समेट रही है, उनमें उदात्तता का अभाव दिखाना उनका मूल उद्देश्य है। मजहबी जनून और नफरत का माहौल वे हमारे सामने उपस्थित कर उससे उत्थान की आकांक्षा करते हैं।

भारत देश की आजादी के लिए विभिन्न आन्दोलन हुए। वह युग संघर्ष का युग था। एक ओर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह, स्वतंत्र भारत की मांग थी तो दूसरी ओर स्वतंत्र पाकिस्तान की मांग हो रही थी। परिणाम स्वरूप अंग्रेज-मुसलमान और हिन्दू इन तीन जातीयों में परस्पर अनबन थी। अंग्रेजोंने 1947 में भारत छोडने का निर्णय लिया लेकिन जाति के नामपर हिन्दुओं का हिन्दुस्तान और मुसलमानों का पाकिस्तान में विभाजन हुआ। यह भारत-विभाजन, दंगे-फसाद, आगजनी, बलात्कार, अराजकता, क्रूरता का समय रहा है। सांप्रदायिक शक्तियाँ इसी समय सक्रिय बनी। जिन्हें अंग्रेजों ने भड़काने की कोशिशें की। "तमस" इसी प्रकार के माहौल की एक भयावह कहानी है। उसी समय भीष्म साहनी पंजाब में थे। उन्होंने आँखों देखी घटनाओं का चित्रण इसमें किया है इसी कारण इस उपन्यास का विशेष महत्व है।

उपन्यास का कथानक घटना प्रधान और चरित्र प्रधान होता है। उपन्यासकार घटनाओं को

चित्रित कर समाज का, व्यक्ति का चित्र उपस्थित करता है। इसके लिए घटनाओं का क्रमबध्द विवेचन ही काफी नहीं है। घटनाएँ उखड़ी उखड़ी क्यों न हो जो व्यक्ति तथा समाज का चित्र प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रित करने के लिए सक्षम हो तो काफी है। "तमस" में उसी तरह घटनाएँ बिखरी-बिखरी हैं लेकिन कथानक को विकसित करनेवाली है। उनमें रोचकता, कुतुहलता और मार्मिकता है। जन-परंपरा, राजनीतिक कुटिलता, धार्मिक संकुचितता को स्पष्ट करने के लिए सक्षम है। जो समाज का प्रतिनिधित्व करनेवाली धार्मिक वृत्ति को चित्रित करने के लिए प्रभावी बन गयी है।

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से "तमस" की ओर देखा जाय तो इसमें किसी एक ही पात्र का विशिष्ट चरित्रांकन नहीं है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है "आतंक" जिसके इर्द-गिर्द घटनाएँ घटित होती हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग के पात्रों का अंकन इसमें है। जो साम्राज्यवाद, जनसाधारण, हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले हैं। जिन के माध्यम से लेखक ने उदात्तता, विशालता, गंभीरता की आवश्यकता प्रतिपादित की है। इस उपन्यास में पात्रों की भरमार हैं। संपूर्ण उपन्यास में रिचर्ड का प्रशासकीय रूप, लीजा की परेशानी, बख्शजी तथा जरनैल की देशभक्ति, देवदत्त की इमानदारी, शाहनवाज की दोहरी वृत्ति, राजो की मानवीयता, नत्थू की द्वंद्वग्रस्त भयभीत स्थिति, मुरादअली की मक्कारी, हरनामसिंह बन्तो जैसे जनसाधारण की दयनीयता, आर्य-समाजियों का आवेश, मुस्लिम लीगियों की नफरत, सिक्ख लोगों की लड़ाखू वृत्ति तथा कम्युनिस्टों की वैचारिकता का विवेचन किया है। जिनके माध्यम से लेखक ने विभिन्न मनोवृत्तियों का, मानवी मूल्यों की हत्या का, असहाय्यता का दर्शन करा दिया है। धर्म परिवर्तन का क्रूर एवं करूण चित्र इसमें किया गया है। संपत्ति का मोह, जीवन की अभिलाषा का तथा धार्मिक कट्टरता का अंकन इन पात्रों के माध्यम से करने में भीष्मजी सफल बन गये हैं।

"तमस" उपन्यास के संवाद अनेक विशेषताओं से युक्त है जिनके माध्यम से भीष्मजी ने मजहबी जनुन, इर्ष्या, द्वेष आदि का चित्रण किया हैं। मनोवैज्ञानिकता का परिचय भी मिलता है। उपन्यास में संवाद महत्वपूर्ण होता है, जिनके माध्यम से कथानक की उपयुक्तता, पात्रों की विचार प्रवृत्ति, लेखक का उद्देश्य स्पष्ट होता है। संवाद ही उपन्यास को रोचक, मनोरंजक और सौष्ठवपूर्ण बनाते हैं। "तमस" उपन्यास के संवाद सुबोध, संक्षिप्त एवं मार्मिक हैं। लेखक की समाज से संबंधित समस्याओं का, उनकी अनुभूतियों का, विचारों का प्रभावपूर्ण चित्रण करने के लिए संवाद उपयुक्त बन गये हैं। अनेक जातीयों, धर्मप्रणालियों की विचार भिन्नता, द्वेष, घृणा, कुटिलता, पाखण्ड आदि को लेखक संवादों के माध्यम से परिचित करा देते हैं। जिससे उनके संस्कार, परिवेश तथा जीवन मूल्यों की सच्चाई के दर्शन होते हैं। वर्तमान घटनाओं की समीक्षा, उसका महत्व और पात्रों की मन:स्थिति का वर्णनात्मक

चित्रण संवादों के कारण ही सफल बन गया है। भारतीय जनता की रचना, नस्ल, उनकी श्रध्दा, रूढि, परंपरा, ऐतिहासिक उदात्तता का परिचय लीजा-रिचर्ड के संवादों से मिलता है। हिन्दुओं के प्रति मुसलमानों की घृणा-इर्षा, द्वेष का परिचय, राजनीतिक पार्टियों की अवसरवादिता, जनसाधारण लोगों का भोलापन, धार्मिक संघटनाओं की धर्माभिमानता का प्रभावी स्पष्टीकरण करने में भीष्मजी सफल हुए है। इसमें देश के प्रति प्रेम, सांप्रदायिकता के प्रति विद्रोह, मानवीयता के प्रति आकुलाहट है। जो पाठकों के साथ भावात्मक संबंध स्थापित करती हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि "तमस" उपन्यास के संवाद नाटकीय, स्वाभाविक, प्रवाहयुक्त, पात्रानुकूल, भावानुकूल, प्रसंगानुकूल और व्यंजनापूर्ण हैं। सांप्रदायिक दंगों से निर्माण विनाश-लीला का वातावरण चित्रित कर उसकी भयावहता का परिचय देकर उससे दूर रहने की प्रेरणा देते हैं।

सांप्रदायिक माहौल का भयानक वातावरण भीष्मजी ने यथार्थ रूप में किया है। समाज व्यवस्था, वर्गों की भिन्नता, रहन-सहन, विचार आचारों की विभीन्नता, मनोभावों की गुत्थियाँ, रूढ़ि परंपरा, मान्यताएँ आदि बातों का सूक्ष्म निरिक्षण कर आतंक भरा भयावह चित्रण करने में भीष्मजी सफल हुए है। देश की आजादी से पूर्व का सही इतिहास लेखक ने प्रस्तुत किया है। अंग्रेज अपने स्वार्थ के लिए धर्म के नामपर हिन्दू-मुसलमानों को भड़का देते हैं जिससे सांप्रदायिक दंगे, आगजनी, मार-काट, खून खराबा, बलात्कार, अत्याचार, आत्महुती आदि का सही चित्रण "तमस" में कीया है। लेखक विशेषयता यह होती है कि वह जिस माहौल में रहता है, जिस परिवेश में पलता है, आँखों से देखता है उसे साहित्य के माध्यम से दुनिया के सामने प्रस्तुत करता है। भारत विभाजन भारतीय इतिहास की व्यथा कथा है जो भीष्मजी ने अपने आँखों से देखी है, उसमें कल्पना का पुट जरा भी नहीं है। जिसके आधारपर देश-काल का यथार्थ बिम्ब प्रस्तुत किया है।

नत्थू द्वारा सुअर मरवाने की घटना इस उपन्यास की प्रमुख घटना है जो विनाश-लीला का कारण बनती है। नत्थू द्वारा सुअर की हत्या करवा कर अन्य किसी के द्वारा उसे मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंकवा देने में अंग्रेजों की चाल थी, जिससे मुसलमान क्रोधित हो उठते हैं। वे एक गाय को काटकर धर्मशाला में फेंक देते हैं। और हिन्दू-मुसलमानों में भीषण दंगे होते हैं। जो शहर से लेकर गांव-गांव तक पहुंच जाते हैं। स्त्रियाँ आत्मसम्मान के लिए कुए में बच्चों सहित कूद कर जान दे देती हैं। इस प्रकार "तमस" में तत्कालीन देश-काल का वातावरण सजीव बन गया है।

"तमस" का कथानक भारत के विभिन्न जाति, धर्मों और संप्रदायों से संबंधित है। इसमें शहर से लेकर गावों और कस्बों का चित्रण है। यही कारण है कि "तमस" की भाषा में विविधता है।

भाषा में एकरसता तथा रोचकता है। अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दु, संस्कृत भाषा का सफल और प्रसंगानुकूल प्रयोग भीष्मजी ने किया है। जिसमें सहजता है। शहरी और ग्रामीण भाषा का, मुहावरों का शुध्द-विशुध्द रूप अपनाया है जो प्रशंसनीय है।

शैली की दृष्टि से घटनाओं का वर्णन भी सफल और मार्मिक है। इस उपन्यास में सांप्रदायिक घटनाओं की भरमार है। घटनाओं का वर्णनात्मक, विवरणात्मक, व्यंग्यात्मक, उपहासात्मक चित्र उपस्थित करने के लिए भीष्मजी बेजोड़ है। नाटकीय शैली के कारण "तमस" का कथानक गतिशील बन गया है। वर्णनात्मक शैली द्वारा व्यक्ति, समाज और उनके वर्गोंका सजीव, यथार्थ वर्णन किया है। तो व्यंग्यात्मक शैली से राजनीतिक स्वार्थान्धता का, अवसर वादिता का हुबहू चित्रण भीष्मजी ने किया है। विवेचनात्मक शैली का प्रयोग कर चिंतन, मनन की गंभीर-ता भी स्पष्ट हुयी है। भावात्मक शैली में पात्रों का द्वंद्वात्मक जीवन दर्शन तथा अनुभूतियों का परिचय बड़ी कुशलता से किया गया है।

उद्देश्य की दृष्टि से "तमस" में भीष्मजी ने सांप्रदायिकता रूपी अंधकार से निकलकर मानववादी उजाले की कामना की है जिसमें व्यक्ति, समाज, देश तथा विश्व-शांति के लिए निर्मल आलोक है। उन्हों सामजिक प्रश्नों, जीवन-मूल्यों और समस्याओं का उद्घाटन किया है और समाजवाद तथा प्रगतिशीलता में समन्वय स्थापित करने की कोशिश की है। सामाजिक प्रश्नों तथा मूल्योंपर समाधान ढूंढते हुए संकीर्ण विचारों पर प्रहार किया है। भीष्मजी ने अपनी पैनी दृष्टि से धार्मिक मिथ्या और दंभ को अनावृत्त किया है, जो समाज को विरूप एवं विकृत बना देता है। व्यक्ति को मानवता से दूर ले जाता है।

भीष्मजी देश के भावात्मक सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व देते हैं। प्रचलित धर्मों का, नियमों के प्रति विद्रोह कर उदात्त मानवीयता का पथ प्रशस्त कर आगे बढ़ने के लिए विशेष प्रयत्नशील हैं। सचेत एवं सुविचारी बनने के लिए प्रेरित करते है। स्वतंत्र्यता के नामपर उभरने वाली स्वैर-नैतिकता की ओर संकेत करते है। आज हमारा देश जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है वह बहुत ही मुश्किल कठिन है लेकिन व्यक्ति के लिए उलझनभरी नहीं है। समाज का हर व्यक्ति इस परिस्थिति को संभाल सकता है, लेकिन धार्मिक संघटन और राजनीति इसे संभल नहीं सकती। राष्ट्रीय तथा सामाजिक कार्य के लिए केवल मानवता ही काम आ सकती है, जो व्यक्ति-व्यक्ति में तथा धर्म-धर्म में समझौता कर सकती है। धर्म के नामपर इस प्रकार दंगें, फसाद होते रहें तो विनाश दूर नहीं है। आदर्श राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण ही इस उपन्यास का मूल उद्देश्य है।

मानव जीवन की समग्रता एवं यथार्थ परिवेश उपन्यास की खास उपलब्धि है। एक विशाल कैन्वेस में युगीन जीवन एवं समकालीन परंपरा की कलात्मक अभिव्यक्ति उपन्यासकार करता है। यथार्थ

जीवन, जीवन की कटुता एवं भयंकरता से परिचित कराकर स्वस्थ दृष्टि देना उपन्यासकार का मूल उद्देश्य होता है।

उपन्यास के माध्यम से लेखक समाज का वास्तविक चित्र अंकित करता है। समाज की रचना, धारणा, करूणा, संभावना की संकल्पना पाठक के सामने प्रस्तुत करना भीष्मजी का मूल उद्देश्य 'तमस' उपन्यास में परिलक्षित हुआ है। भीष्मजी पंजाब की देन है। जब 1947 में भारत का विभाजन हुआ तभी वे पंजाब में थे और वहाँ से दिल्ली आ गये। इस कारण विभाजन कालीन समस्याओं को उसके दुष्परिणामों को उन्होंने भोगा हैं। अंग्रेजों की राजनीति भारतीय लोगों का धर्माभिमान, हिन्दू-मुसलमानों का अलगाव, नफरत आदि से वे पूरी तरह परिचित हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भाग भी लिया हैं। हिन्दू पंजाब और मुस्लिम पंजाब का विभाजन कितना हिंसात्मक भयावह एवं दर्दनाक था, इसका अनुभव उन्होंने किया है और उसे वास्तविक रूप में 'तमस' में चित्रित किया है।

विभाजन के नामपर जो क्रूर अत्याचार हुए, सांप्रदायिक शक्तियाँ इनमें किस प्रकार से कार्य कर रही थी, एक दूसरे के प्रति उनके मन में नफरत की ज्वाला कैसे भड़क उठी थी, इन सब को चित्रित करने का प्रयास हिन्दी तथा अन्य साहित्यकारों ने किया है। इस सांप्रदायिक शोकान्त गाथा को विभिन्न दृष्टिकोणों से आँकने का प्रयास अनेक लेखकोंने किया हैं। 'तमस' के पूर्व लिखे गये अनेक उपन्यास विभाजन और सांप्रदायिक भावना का स्पष्टीकरण करते हैं। यशपाल का 'झूठा सच', यज्ञदत्त का 'इन्सान', गुरूदत्त का 'देश की हत्या', रामानंद सागर का 'और इन्सान मर गया', कमलेश्वर का 'लौटे हुए मुसाफिर' तथा अन्य अनेक ऐसे उपन्यास हैं जैसे भगवतीचरण वर्मा का 'भूले बिसरे चित्र', प्रताप नारायण श्रीवास्तव का 'बयालीस' आदि इनमें सांप्रदायिकता पर प्रकाश डाला गया है। 'तमस' में जिन सांप्रदायिक वृत्तियों का चित्रण हुआ है उसकी विशेषताएँ निम्म है -

1. यह सांप्रदायिक उपन्यास है। इसमें हर प्रसंग का संतुलित दृष्टिकोण से चित्रण है किसी भी प्रकार की अतिशयोक्ति तथा भद्दापन नहीं हैं। सांप्रदायिक भावना का यथार्थ चित्रण है।
2. इन लोगों की एक ही नस्ल का परिचय देकर हिन्दू-मुसलमान-सिक्खों में पराया कोई भी नहीं है यह बात स्पष्ट की है।
3. साधारण सी घटना की भयंकर परिणति स्पष्ट की है। केवल एक सुअर की लाश कितने लोगों के मृत्यू का कारण बनी। यह स्पष्ट किया है।
4. सांप्रदायिकता, स्वार्थान्धता, नफरत, द्वेष, घृणा, हत्या, बलात्कार, अत्याचार का प्रभावपूर्ण चित्रण कर कुशलता से मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया हैं।
5. धार्मिक संगठन और सांप्रदायिक समभाव को मानवतावादी दृष्टिकोण से स्वीकार किया है।

6. अंग्रेजों की कुटिल नीति और भारतीयों की भावात्मक एकता की कमियों की ओर संकेत कर सजग, दानिशमंद बनना भारतीय जनता के लिए कितना आवश्यक है यह बात स्पष्ट की है।

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर मैं कह सकती हूँ कि भीष्मजी की "तमस" कृति सर्वश्रेष्ठ है। जिसमें भूतकालीन घटनाएँ है लेकिन वर्तमान युगीन बोध को स्पष्ट कर देती है। और उज्वल आलोक की मांग करती है।

- - -